भारत का उद्योग व्यापार व शेखावाटी के लोग

उत्तर–पश्चिमी भारत की स्थली में बसा हुआ शेखावाटी क्षेत्र पुराने जमाने के उस अंचल के व्यापारिक रास्तों के बीच में पडने के कारण देश के व्यापार वाणिज्य से जुडा हुआ था। फिर भी कच्चे माल और उर्वर भूमि की कमी के कारण मध्य युग में वह किन्ह बडे और विशिष्ट व्यापारों का केन्द्र हो सका हो, ऐसा कहीं पढने सुनने में नही आता। दिल्ली में औरंगजेब के राज्य के बाद जैसे जैसे मुसलमानों का वर्चस्व दिनोंदिन ढीला पडता गया और सन् 1857 में पूर्ण रूपेण समाप्त हो गया उस काल का इतिहास यह बतलाता है कि शेखावाटी के लोग विभिन्न दिशाओं में व्यापार के लिए जाने लगे थे। वे लोग दूरदराज अंचलों जैसे इन्दौर, उज्जैन, दिल्ली, आगरा, फरूखाबाद, प्रयाग पटना, मिर्जापुर, मुर्शिदाबाद आदि जगह जाकर बसने और व्यापार व्यवसाय प्रारंभ करने लगे थे। कहने को तो यह भी कहा जाता है कि जयपुर के राजा मानसिंह जब सम्राट अकबर के प्रधान सेनापति के रूप में बंगाल बिहार की विजय के लिए आये थे उस समय उनके साथ शेखावाटी के लोग भी आये थे। लेकिन इस बात की सत्यता के कोई प्रमाण नही मिले और ऐसे व्यक्तियों की पहचान आज नहीं के बराबर है।

वस्तव में इसके अनेकानेक प्रमाण है ई. सन् 1800 के बाद याने उन्नीसवी शताब्दी में प्रारम्भ से ही शेखावाटी के लोग बंगाल, बिहार, आसाम, आन्ध्र, उडीसा, मध्यप्रदेश एवं महाराष्ट्र में पहुंचने और वहां व्यापार धन्ध करने लग गये थे। इनमें से तो कईयों की उपुर्यक्त सीानों पर शाखायें थी उन्होनें अपनी आर्थिक शक्ति के बल पर अन्य जगहों पर अपनी शाखाएं खोली तो दूसरी और नये व्यक्ति भी आये और अपने अदम्य साहस और सूझबूझ के बल पर न कुछ की स्थिति से उठकर लखपति और करोडपति बन गये।

19 वीं सदी दृष्टान्त के रूप में हम बंगाल की स्थिति को ले तो इतिहास के अध्ययन से हमें पता चलता है कि ई. सन उसके आसपास के अंचल के अनेक लखपति (आज के करोडपतियों के बराबर) फर्म थे। इनमें से कुछ की शाखाएं उतर प्रदेश और मध्यप्रदेश में विभिन्न जगहों पर पहले से ही थी और उन्होने कलकता में अपनी शाखएं खोली थी। व्यापार व्यवसाय में अद्वितीय सफलता प्राप्त करने वाले शेखावाटी के इन उद्यमियों में से कुछ फर्मो के नाम यहां दिये जा रहे है–

मण्डावा के – श्री नाथूराम सर्राफ, श्री हरचन्द राय गोरधन, श्री हरमुख सनेहीराम चौखानी, श्री बलदेवादास जगन्नाथफ

रामगढ़ के – श्री जुगलकिशोर रूइया, श्री सोनीराम पौदार, श्री हरनन्दराय फूलचन्द, श्र सेंवलराम कालोराम

फतेहपुर के – श्री रामकिशन सरावगी, श्री शिवदयाल सूर्यमल, श्री किशनदयाल गजानन्द

मलसीसर के – श्री सेढमली सरावगी, श्री लालचन्द शिवदतराय, श्री जिन्दाराम हरविलास।

डूंडलोद के – श्री शिवबक्स, श्रीराम चन्द्र, श्री घनश्याम दास, श्री बद्रीदास गोयनका

चिडावा के – श्री सूर्यमल झुन्झुनूवाला

शे.खावाटी के – श्री बिशनदयाल हरदयाल सुरेका, श्री सुखदेवदास रामप्रसाद, श्री तेजपाल जमनादास, श्री कन्हीराम हजारीमल केजडीवाल, श्री सनेहीराम जुहारमल

नवलगढ़ के – श्री खेमचन्द सेढमल
दूदवे के – श्री लच्छीराम बलदेवराम

सरदारशहर के – श्री चैनपुर सम्पतराम

चूरू के – श्री अर्जुनराम मोदी, श्री भगवानदास बागला, श्री शिवबक्स बागला, श्री मंगीराम कन्हैयालाल बागला, श्री नाहरमल लोहिया, श्री तनसुखराम गणपतराम खेमका, श्री रूपलाल जोहारमल, श्री मुन्नालाल शोभाचन्द।

रतनगढ़ के – श्री नानूराम रामकिशनदास, श्री गोपीराम गोविन्दराम तापडिया

मारवाडी समाज के व्यक्तियों की विशेषता रही है कि घाटे नफे की परवाह किए बगैर अपने स्वतंत्र व्यवसायी उनमें आदिम आकांक्षा रहती है। उसी के फलस्वरूप यहां काम पर आये लोगो ने मौका मिलते ही अपना स्वतंत्र व्यापार प्रारम्भ कर लिया। इन्होने आर्थिक उन्नति के साथ साथ अपने सार्वजनिक व धाम्रिक अवदानों के कारण काफी नाम भी कमाया।

व्यापारी का धर्म है कि जब जहां भी व्यापार की मंडी उभरती है वह वहां के क्रय–विक्रय के काम में अपने को लगता है। लेकन संसार का नियम है कि धन दौलत सबों के पास एक समान नही होती। साख, इज्जत और ईमानदारी के बल पर भी लोगो को पैसे वालों से अपने व्यापार के लिये ब्याज पर रूपये मिल सके, यह क्रम एक प्रकार से मारवाडी समाज का ही प्रारम्भ किया हुआ था और उसी ने ''सराफा'' का व्यापार बढे रू‍प में करते थे। कलकता में ही 19 वीं शताब्दी में लगभग 30 फर्मे ''सराफे'' के व्यापार में सलंग्न थी और उनमें लगभग 40 प्रतिशत शेखावाटी के लोग थे। सच तो यह है कि आज के जमाने के ये ''सराफै'' के फर्म किया करते थे और उसी व्यापार ने आज की बैंकिग प्द्धति को जन्म दिया है।

'सराफे'' के अलावा 19 वी शताब्दी में अफीम, कपडा, खाद्य पदार्थो एवं फाटके के व्यापार प्रधान थे और अन्यों की तरह शेखावाटी के लोगो ने भी इन व्यापार व्यवसायों में अपनी अच्छी साख सीापित की थी।

बीसवी सदी का प्रारम्भिक काल – उन्नीसवी सदी के प्रारम्भ से पहले ही अंग्रेजो का राजनैतिक वर्चस्व बंगाल, बिहार में बहुत सुदृढ हो ही चुका था। ईस्वी सन् 1857 में देश की राजधानी दिल्ली की सम्पूर्ण सत्ता भी उनके हाथों में आ गई थी। राजनैतिक सता को इस देश में फेसले वाली ईस्ट इण्डिया कम्पनी एवं अन्य विदेशी कम्पनियों के व्यापारिक कार्य कलाप बहुत महत्वपूर्ण थे और अपने माल की निकासी के लिए दूरदर्शी मेहनती, ईमानदार व्यक्तियों की उन्हें आवश्यकता थी। प्रारम्भ में इसी पूर्ति अधिकांश रूप में खत्री तथा कुछ सीानीय व्यक्ति की उन्हें आवश्यकता थी। प्रारम्भ में इसकी पूर्ति अधिकांश रूप में खत्री तथा कुछ सीानीय व्यक्ति करते थे लेकिन धन प्राप्ति के साथ उनमें आमोद प्रमोद का आकर्षण और चारित्रिक कमी पनपनी प्रारम्भ हुई। इस स्थिति ने शेखावाटी या राजस्थान के अन्य लोगों को इन अंग्रेज व्यापारियों के सम्पर्क में आने का और उनके साथ व्यापार करने का मौका दिण। सबसे पहले यह काम उनका माल बेचने वाले याने ''दलाल'' के रूप में प्रारम्भ हुआ। अनेक व्यापारी जिनमें से उपर के फर्मो में से कुछ थे, उनके इतने बडे विश्वासपात्र बने कि इन कम्पनियां के ''सोल ब्रोकर'' या ''बेनियन'' बना दिय, जिसके चलते वे धीरे आस्ते उद्योगों की सीापना और उनके चलाने की नीति से वाकिफ होते गये। इस क्रम के साथ शेखावाटी या अन्य क्षेत्रों के मारवाडी विभिन्न व्यापारों में और विशेषकर आयात निर्यात एवं अन्तप्रान्तीय व्यापार भी बडे पैमाने पर करने लग गये।

मारवाड़ियों के कहावत है कि ''लक्ष्मी सचला है अचला नहीं'' और सात पीढ़ी से अधिक एक परिवार में नही रहती, बीसी सदी के लगने के समय शेखावाटी के व्यापारियों की जो स्थिति थी और ईसवी सन् 1910 से 1950 एवं 1950 से आज तक के दो कालखण्डो में जो स्थिति रही है वह इस प्रवाद की मुह बोलती तस्वीर है।

जैसा कि अगर बताया गया है कि शेखावाटी के लोगो ने प्रथम विश्वयुद्ध प्रारम्भ होने से पहले व्यापार में अपना वर्चस्व बना लिया था। विश्वयुद्ध से अन्य व्यापारिक समुदायों की तरह शेखावाटी के व्यापारियों को धनार्जन का अच्छा मौका मिला, जिसमें कई नये नये व्यक्ति भी अपना नया वर्चस्व बनानेमें सफल हुए। साथ ही दृष्टिकोण में जो थोडा बहुत परिवर्तन आ रहा

था। उससे कई परिवारों ने उद्योग स्थापित करने की और अपना विशेष करने की और अपना विशेष ध्यान लगाया और इस नई विद्या में धीरे आस्ते बढते बढते इस स्थिति करने की और अपना विशेष ध्यान लगया और इस नई विद्या में धीरे आस्ते बढते बढते इस स्थिति को पहुंच गये कि न् 1950 में देश के उद्योग धन्धों में लगभग 25 प्रतिशत धन्धे उनकी कम्पनियों के अधिकार क्षेत्र में आ गये। इनमें से अधिकतर उन्होने स्वयं सीापित किए और दूसरी और थोडी बहुत विदेशी कम्पनियों को उन्होने शेयर बाजार के मार्फत या उन कम्पनियों के मालिकों से सौदे कर खरीद लिया। सन् 1926 में मारवाडी अग्रवाल महासभा का अधिवेशन कलकता में हुआ था उसमें कहा गया था। – आज मारवाडी उद्यमियों को 50 प्रतिशत जूट, प्रेस 13 प्रतिशत कॉटन मिल पर मालिकाना है एवं तेल मिल, चावल मिल, कोयला खान, चीनी मिल तथा आयात निर्यात व्यापार में अच्छा वर्चस्व कायम किया है।''

बडे उद्योग व्यवसायों के क्षेत्र? में सबसे पहले सन् 1915–16 में रतनगढ़ के श्री सूरजमल नागरमल जालान ने तीन जूट फैक्ट्रिया कायम की। शेखावाटी के श्री केशोराम पोदार ने कॉटन मिल लगाई। पिलानी व बिडला परिवार ने कलकता में जूट मिल और दिल्ली, ग्वालिय और कलकता में काटमन मिले लगाई।

सन् 1920 से लेकर 1939 तक का खण्डकाल चीनी की मिलों की स्थापना, कॉटन मिलों की सीापना कोयला खान आदि की एक के बाद एक फैक्ट्रियों के लगाये जाने का इतिहास है जिसमें शेखावाटी के लोगों में बिड़ला, डालमिया, सेकसरिया, सिंधानिया, पौदार, गोयनका, बजाज आदि परिवारों का सर्वाधिक योगदान रहा है।

द्वितीय विश्व युद्ध के प्रारम्भ के बाद –

द्वितीय विश्व युद्ध (1939–45) के कारण उद्योग धन्धों में लगे हुए परिवारों को बहुत बडा आर्थिक लाभ हुआ। उनकी व्यापारिक क्षमता बढी। युद्ध के कारण कुछ नये प्रकार उद्योग धन्धें एव व्यापारों का भी आविर्भाव देश में हुआ एवं व्यापारिक चिंतन मनन एवं कार्य प्द्धति में एक नये प्रकार का दृष्टिकोण उभरने लगा। इन क्रियाओं में प्रतिरूप में सबसे पहले नये बैंक और बीमा कम्पनियों की स्थापना हुई।

शेखावाटी के बिड़ला परिवार ने, सिहानिया परिवार, गोयनका परिवार व रतनगढ के जालान परिवार ने बीमा कम्पनियों खाली और बैंक स्थापित किये जिनकी गणना समय के अन्तराल के बाद देश के प्रमुख बैंको में होने लगी। इससे देश की आर्थिक स्थिति, आधुनिक ऋण योजनाएं आदि का युवकों को काफी अच्छा ज्ञान होने लगा, जो आगे चलकर उद्योग व्यवसाय के क्षेत्र में लाभदायक हुआ। दूसरी और ताती सीली चोरी जोरी के एवचं अन्य सीानों के सराफा के व्यापार में संलग्न लोग रहते थे उसका आधुनिकीकरण हो गया और विदेशी की बीमा कम्पनियों की टक्कर में स्वदेशी बीमा कम्पनियां आ खडी हुई।

द्वितीय विश्व युद्ध शेष होने के बाद देश में जो नई हलचन पैदा हुई और देश स्वतंत्र हुआ, उससे देश लोगो को उद्योग व्यापारो में विस्तृतीकरण एवं नये नये धन्धे और उद्योग अपनाने का मौका मिला, पूंजी के अत्यधिक अभाव के बावजूद देश के ही उद्यमियों को भार तकी स्वाधीन सरकार के नये उद्योग धन्धे लगाने में सर्वाधिक सहानुभूति मिली। दूसरी और युद्ध के समय धनापार्जन किये हुए कुछ लोगो ने अन्य तरीको से भी सीापित उद्योग व्यवसायों पर अपना सर्चस्व जमाने की चेष्टा की। फलस्वरूप शेखावाटी के लोगो के साथ साथ मारवाडी समाज के अन्य लोगो ने भी शेयर बाजार के मार्फत कुछ कम्पनियों क अधिकांश शेयर खरीद कर उनी मलकियत अख्तियार की। एक स्थिति यह भी बनी कि देश की स्वतंत्रता के बाद विदेशी कम्पनियों ने इस आशंका से कि उन्हें सरकारी सरक्षण पहले क अनुकूमल नही मिलेगा और अफ्रीका एवं अरब के कुछ मुल्कों में नये व्यापारां के प्रशस्त हो रह मार्ग से प्रभावित होकर भी अपनी कुछ कम्पनियों बेचने लगे। कुशाग्र व्यापारी बुद्धि वाले शेखावाटी एवं आसपास के इलाके के उद्यमियों ने इस स्थिति का पूरा लाभ उठाया और कई उद्योग धन्धो को अपने में समाहित किए हुए मैनेजिंग एजेन्सी वाली अनेक कम्पनीयों की मल्कियत इनके हाथों में आ गई। उदाहरण के रूप में –

1. चिडावा के डालमिया परिवार द्वारा वेनेट कोलमैन एवं गोवन ब्रादर्श

2. डूंडलोद के गोयनको द्वारा आक्टेवियस स्अील एवं डंकन ब्रादर्स
3. रतनगढ के सूरजमल नागरमल द्वारा डंवेनपोर्ट, मैकलोड, ब्रिटिश इण्डिया कॉपोरेशन एवं कलकता व बम्बई दोनो जगह की गैस कम्पनियां
4. मुकुन्दगढ के कानोडिया द्वारा कुछ जूट मिलें और चीनी मिलें
5. पिलानी के बिडला परिवार द्वारा हैदराबाद सरकार की बन्द 3 फैक्ट्री
6. नवलगढ़ के जैपुरियों द्वारा स्वदेशी कॉटन मिल एवं कोयले की खदाने
7. खण्डेले के धानुको द्वारा दूसरो के साझे में कागज की मिल

सन् 1945 से 65 तक इन दोनो प्रकारों से अधिगृहित एवं स्थापित उद्योग व्यापारी का नियंत्रण अपने हाथ में लेने वालों की बहुत लम्बी है और उसे पूरी की पूरी प्रकाशित करना आवश्यक भी नहीं

लेकिन यह कहना बिलकुल गलत होगा कि केवल चालू कम्पनियों को खरीदकर या शेयर बाजार के मार्फत उनका अधिग्रहण करने तक ही उद्यमियों का उद्योग व्यापार क्षेत्र सीमित था। इस अवधि में याने 1945 से 1960 के बीच अनेकाने नये उद्योग धंधे स्थापित करने में और उन्हें सफलता पूर्वक चलाने में शेखावाटी के उद्यमियों ने प्रमुख भूमिका निभाई। इन उद्योग धंधे स्थापित करने मे और उन्हें सफलतापूर्वक चलाने में शेखावाटी के उद्यमियों ने प्रमुख भूमिका निभाई। इन उद्योग धंधे में ऐसे अने उद्योग धंधे थे, जिनका इस देश में हले कही नामोनिशान नही था। इने द्वारा सर्वदा एक नये क्षेत्र में पदर्पण करने के दृष्टांत कम नही। बल्कि यह भी साधिकार कहा जाये कि 1945 से लेकर 1980 तक विशा पैमाने पर नये नये उद्योग धंधो की शुरूआत इन लोगो ने करके देश की बहुत बडी आर्थिक सेवा की है, तो वह अत्युक्ति नही हागी। दो चार उदाहरणों के रूप में –

1. पिलानी के बिडला परिवार द्वारा मोटर कार के रेयन सिन्थेटिक फाइबर, रासायनिक खाद, वनस्पति, सीमेंट, कागज, अल्मुनियम, की फैक्टिण्या, सूती मिल, की मशीने एवं रेल के डिब्बे बनाने के कारखाने, मीशन टूलस आदि के कारखाने।

सिंघाने के सिंहानियों द्वारा एल्यूमिनियम, कागज, सीमेंट, बक्साइट आदि कारखाने

सीकर के बजाज ग्रुप द्वारा स्कूटर बिजली के सामान, केमिकल्स, लोह, आयुर्वेदिक दवायें आदि की फैक्ट्रियां

मुकुन्दगढ़ के कानोडिया द्वारा केमिकल्स सूत की मिलें आदि।

नवलगढ के जैपुरिया द्वारा सूति कपडे की मिल, पोलियेस्टर फाइबर की फैक्ट्री आदि

रतनगढ के जालान एवं बाजोरिया परिवारों द्वारा ऑक्सीजन व अन्य गैसों की फैक्टरियां आदि।

फतेहपुर के भरतिया परिवार द्वारा स्अील वायर एवं रेल्वे के सार–सरजाम बनाने के फैक्टरी आदि।

नीमका थाना के मोदी परिवार द्वारा कपडा मिल, रेयन, मोटर टायर, आदि।

रामगढ के बगडिया परिवार द्वारा चाय की मशीन बनाने एवं स्अील के विविध सरजाम की फैक्टरी

नवलगढ़ के विभिन्न परिवारों द्वारा रबर की फैक्टरी प्रोसेसिंग हाउस, पावरलूमस आदि।

नवलगढ के जीवराजका परिवार द्वारा टेलीविजन की फैक्टरी आदि।

उपर्युक्त सूची व उसमें दिखाये गये उद्योग बहुत सीमित है। सन् 1950 से 1980 तक का शेखावाटी के उद्यमियों और व्यापारियों के लिये निरन्तर नये नये उद्योग धंधे खरीदने, नई फैक्ट्रीयां लगाने और नये नये व्यापारों में प्रवेश करने का युग रहा है। वास्वत में ऐसे क्षेत्र बिरले ही है।जहां से प्रवेश न कर गये हो और सफलतापूर्वक उन उद्योग व्यवसायों का सम्पादित न कर रहे हो। मिले, जूट मिल, कपडा मिले, रासायनिक खाद की मिलें, इंजीनियरिंग कारखाने, चाय कागज, केमिकल, एलोपैथि एवं आयुर्वेदिक दवाइया बनाने की फैक्टरियां, कागज मिले, मोटर कार, स्कूटर, साइकिल, ट्रक बनाने की फैक्टिरया, सीमेंट कारखाने, काफी बगान, मनुष्य द्वारा निर्मित योन विभिन्न प्रकार के सिन्थेटिक कपडे और धागे की मिले, दैनिक, साप्ताहिक और मासिक अखबार प्रकाशन नदियों और समुद्रो के चलाने वाले छोटे बडे सभी जहाजों की कम्पनिया, हवाई जहाजों की कम्पनियां नमक कारखाने, पावरलूम्स, कपड़ो की प्रोसेसिंग फैक्टरिया, फिल्म उद्योग एवं फिल्मों की प्रोसेसिंग लेबोरेटरियां, कई मंजिले मकानो का निर्माण, प्लास्टिक की विभिन्न तरह की फैक्टरियां आअिद प्रायः हर उद्योग धंधे से देश के कोने कोने में शेखावाटी का मनुष्य आज जुडा हुआ है। इस प्रकार व्यापार का शायद ही कोई ऐसे क्षेत्र हो जिसमें उसकी पैठ न मिलती हो।

सन् 1980 के बाद

सन् 1980 के बाद देश के व्यापार उद्योग क्षितिज में तेजी से परिवर्तन आना शुरूहुआ है। इन वर्षो में नये रूप से एक और विदेशी कम्पनियों के अधिग्रहण की बाए सी आई है तो दूसरी और सरकारी नीति में परिवर्तन के कारण बडे बडे उद्योग धंधे लगाने की भी शुरूआति पुनः होने लगी है। क्षमता और साख के मामले में आज शेखावाटी के 25–30 परिवार ऐसे है जो अग्रणी पंक्ति में खडे है और पूंजी एकत्रण और नियोजन की साख में सबसे आगे है अतः यह अंदाज करना किया 20 वीं शताब्दी के बाकी वर्षो में उद्योग धंधो में शेखवाटी के लोगो का वर्चस्व कायम रह जायेगा, बहुत कुंछ ठीक उतर सकता है।

कुछ लोग फतवा कस देते है कि देश के उद्योग धंधे पर शेखवाटी के लोगो का, और कभी कभी मारवाडी शब्द उसके साथ जोड देते है, 60 प्रतिशत आधपत्य है। यह नितान्त भ्रमात्मक कव्य है, वे भूल जाते है कि इतने बडे देश में कुछ ऐसे विशाल क्षेत्र है जहां के उद्योग धंधे में शेखावाटी तो क्या, मारवाडी समाज का भी बहुत मामूली अंशमान है। स्वयं की झूठी बडाई के बदले स्वयं की कमियां कर निरीक्षण शायद आदि श्रेयसकर है। फिर भी इतना तो कहा ही जा सकता है। कि अपनी संख्या के अनुपात में शेखवाटी के लोग और मारवाडी समाज के अनय लोगो ने देश के उद्योग व्यापार व व्यवसाय में और देश को आगे बढाने और उसकी औद्यागिक नीव की खूब सुदृढ करने में लगभग 15–20 प्रतिशत तक हाथ बंटा कर अपना पूरा योगदान दिया है। छोटे उद्योग धंधें।

छोटे उद्योग धंधे का जिक्र कुंछ कम अंशो में ही उर्पुक्त निर्वाचन में आ पाया है लेकिन इस क्षेत्र में शेखावाटी के लोग पीछ`नही है और देश के कोने कोन में जहां भी वे बसते है इस प्रकार के उद्योग लगाने में पूर्ण रूप से सचते है। कहने में तो यह आता है कि आंध्र प्रदेश कर्नाटक, आसाम, उडीसा, मध्य प्रदेश, बिहार और उतर प्रदेश, आदि में उनके द्वारा स्थापित किये जा रहे उद्योग धंधे का प्रतिशत 50 से कम नही। लेकिन यह बात भी बडी अत्युक्ति है। इस प्रतिशत को 25–30 के अन्दर आंकाना अधिक उपर्युक्त होगा क्योकि सरकारी क्षेत्र सहकारी क्षेत्र एवं सरकार रीति नीति के अनुकूल उद्योग व्यापार की सीापना कि क्रियाओं में बहुत बडा परिवर्तन आया है और किसी भी वर्ग विशेष का बहुत बडा वर्चस्व आज कहीं भी संभव नहीं रहा है।

विदेश में फैक्टरियां

उसी सदी के प्रारम्भ में विदेश जाने वालें के सामाजिक बहिष्कार की बात स्मरण आने पर हंसी आती है। कितना बडा परिवर्तन आया है। उस कूप मंडूकता को छोड कर आज तो विदेशों में उद्योग धंधे अनेक है और उनमें समुचित भाग शेखावाटी के लोगो का भी है। कल कारखाने श्याम, इण्डोनेशिया, मलेशिया, सउदी अरेबिया, नाइजीरिया, इराक, सूडान, इंग्लैण्ड आदि स्थानों में लगाने गये है। बडे बडे उद्योग धंधे के अलावा कुछ छोटे उद्योग धंधे भी सीनीय लोगो के साझे में मध्यम श्रेणी के लोगो ने भी इन देशों में स्थापित किया है। स्थानीय लोगो के सत्य का प्रश्न सब समय हर एक देश की सरकार के सामने रहता है। तथापित संसार में जस प्रकार उद्योगो का विशेषीकरण हो रहा है, आवागमन बहुत सुलभ हो गया है और एक दूसरे से मिलने जुडने और पारिवारिक सम्बन्ध कायम करने के विधि पुरानी मान्यताये छू मंतर हो गई है। इन सब कारणों से विदेशों में व्यापार व्यवसाय एवं उद्योग धंधे में संलग्न होने का क्रम धीरे धीरे और भी तीव्र हो सकता है और भविष्य की सम्भावनायें काफी उज्ज्वल है।

उस प्रकार हम देखते है कि शेखावाटी की माटी पानी में जहां शौर्य और वीरता अपने मूर्तमान रूप में रही है वही साहसिकता, बुद्धि व्यापार कौशल और औद्योगिक जोखिल उठाकर आगे बढने की दिशा में भी यहां के सेठ अगल पंक्ति में खडे है।